इकाई 24 संक्षेपण, भाव पल्लवन और निबंध लेखन

इकाई की रूपरेखा

24.0 उद्देश्य

24.1 प्रस्तावना

24.2 संक्षेपण

- 24.2.1 संक्षेपण का महत्व
- 24.2.2 संक्षेपण के गुण
- 24.2.3 संक्षेपण की प्रक्रिया या विधि

24.3 भाव-पल्लवन

- 24.3.1 भाव-पल्लवन का महत्व
- 24.3.2 भाव-पल्लवन की प्रक्रिया या विधि

24.4 निबंध-लेखन

- 24.4.1 निबंध-लेखन का स्वरूप और प्रकार
- 24.4.2 निबंध-लेखन की प्रक्रिया

24.5 सारांश

24.6 शब्दावली

24.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

24.8 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

24.0 उद्देश्य

यह आधार पाठ्यक्रम की अंतिम इकाई है। इस इकाई में हम **संक्षेपण, भाव-पल्लवन और** निबंध-लेखन की चर्चा करेंगे।

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- संक्षेपण एवं भाव-पल्लवन का महत्व बता सकेंगे;
- संक्षेपण की प्रक्रिया या विधि समझ सकेंगे;
- किसी अनुच्छेद (पैराग्राफ) या दिए गए अंश का संक्षेपण कर सकेंगे;
- भाव-पल्लवन की प्रक्रिया समझ सकेंगे;
- किसी वाक्य या सूक्ति का भाव-पल्लवन कर सकेंगे;
- निबंध लेखन की प्रक्रिया का परिचय प्राप्त कर सकेंगे;
- निबंध-लिखना सीख सकेंगे; तथा
- किसी दिए गए विषय पर निबंध लिख सकेंगे।

24.1 प्रस्तावना

हिंदी के आधार-पाठ्यक्रम के अंतर्गत अब तक आप हिंदी भाषा से संबद्ध विभिन्न विषयों का अध्ययन कर चुके हैं। पाठ्यक्रम के इस अंतिम खंड में आपने हिंदी-भाषा में लेखन से संबंधित विभिन्न पहलुओं की जानकारी प्राप्त की है और उन पक्षों पर लिखना सीख गए हैं। इसी क्रम में, इस इकाई में आप संक्षेपण, भाव-पल्लवन और निबंध-लेखन के विषय में आवश्यक जानकारी प्राप्त करेंगे तथा इन्हें लिखना सीखेंगे।

24.2 संक्षेपण

'संक्षेपण' का शाब्दिक अर्थ संक्षिप्त या छोटा करना है। हिंदी में इस शब्द का प्रयोग अंग्रेजी के 'Precis Writing' के अर्थ में किया जा रहा है। संक्षेप के लिए संक्षेपीकरण, सार, सार-संक्षेप, भाव-संक्षेप आदि शब्दों का प्रयोग भी कर दिया जाता है। किसी लंबे गद्यांश, अवतरण या विवरण को सार रूप अथवा संक्षेप में प्रस्तुत करना 'संक्षेपण' कहलाता है। संक्षेपण में किसी दिए गए अंश को इस प्रकार छोटा किया जाता है कि उसके सभी प्रमुख तथ्य, भाव या विचार मूल अंश के लगभग एक तिहाई शब्दों में आ जाते हैं। दूसरे शब्दों में संक्षेपण मूल अंश के लगभग एक-तिहाई आकार का होता है और इसमें मूल अंश की प्रमुख बातें भी सार-रूप में आ जाती हैं।

24.2.1 संक्षेपण का महत्व

भाषा के व्यवहार में संक्षेपण का बहुत महत्व है। आज के व्यस्त जीवन में तो इसकी उपयोगिता और भी बढ़ गई है। समयाभाव के कारण प्रत्येक मनुष्य अपने काम को कम-से-कम समय में कर लेना चाहता है। सच कहें तो किसी भी कुशल वक्ता, संपादक, संवाददाता, लेखक, वकील, सरकारी अधिकारी आदि का काम इसके बिना नहीं चलता। व्यावहारिक दृष्टि से सभी को इसकी आवश्यकता पड़ती है। आप अपने जीवन को देखें तो पाएंगे कि आपका काम भी इसके बिना नहीं चलता। उदाहरण के लिए आप कोई नाटक देखकर लौटे हैं और आपका मित्र उसकी कहानी आपसे जानने को उत्सुक है। आप कहानी के संक्षेपीकरण द्वारा तीन घंटे की कथा पन्द्रह-बीस मिनटों में कह देते हैं। संक्षेपण से श्रम और समय की बचत होती है तथा आवश्यक बातों को कम-से-कम शब्दों में प्रकट कर दिया जाता है।

24.2.2 संक्षेपण के गुण

हम देख चुके हैं कि जीवन के हर क्षेत्र में संक्षेपण की उपयोगिता है। कई बार हम अपने भावों या विचारों को संक्षेप में प्रकट करने की जरूरत महसूस करते हैं। हमें लगता है कि हम सार-रूप में अपनी बात रख दें। तब हमें अपने भावों या विचारों के अनावश्यक अंश को निकाल देना पड़ता है और मुख्य बात पर अपनी दृष्टि केंद्रित करनी पड़ती है। उस मुख्य बात को हम क्रमबद्ध रूप में रखते हैं और यह बात भी हमारे मन में रहती है कि मुख्य बात या मूल कथ्य पूरी तरह व्यक्त हो जाए — उसमें से कोई महत्वपूर्ण बात छूट न जाए। हम अपनी बात को सरल और शुद्ध भाषा में स्पष्टता के साथ रख देते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि संक्षिप्तता, क्रमबद्धता, पूर्णता तथा भाषा की सरलता और स्पष्टता संक्षेपण के मुख्य गुण हैं।

24.2.3 संक्षेपण की प्रक्रिया या विधि

संक्षेपण की प्रक्रिया या विधि को उदाहरणों के द्वारा समझना आपके लिए आसान होगा। आइए, इसे कुछ उदाहरणों के द्वारा समझने की कोशिश करें। अपनी बात हम एक वाक्य से शुरू करते हैं। मान लीजिए आपके सामने यह वाक्य है : "रमा खाने-पीने के व्यंजन बनाने में प्रतिदिन पाँच घंटे का समय व्यतीत करती है।" यदि आप इस वाक्य को ध्यान से देखें तो

पाएंगे कि इसमें कुछ फालतू या अनावश्यक शब्द हैं, जिन्हें बड़ी सरलता से हटाया जा सकता है। 'व्यंजन' खाने-पीने के लिए ही होते हैं, अतः इस वाक्य में प्रयुक्त 'खाने-पीने' को हटाया जा सकता है, क्योंकि इन शब्दों का फालतू या अनावश्यक प्रयोग हुआ है। इसी प्रकार 'घंटे' शब्द के आ जाने से 'समय' शब्द भी अनावश्यक है। कारण यह है कि जो बात 'घंटे' से व्यक्त हो रही है वही 'समय' से भी हो रही है — और जब किसी एक ही बात को दुबारा कहा जाता है तो उसे 'पुनरुक्ति' या पुनरावृत्ति कहते हैं। संक्षेपण करते समय अनावश्यक और पुनरावृत शब्दों या भावों को हटा दिया जाता है। पुनरुक्ति में प्रयुक्त दो शब्दों में से केवल एक को रखना ही काफी होता है। अब आप संक्षेपण के द्वारा उपरिलिखित वाक्य को इस प्रकार लिख सकते हैं — 'रमा व्यंजन बनाने में प्रतिदिन पाँच घंटे व्यतीत करती है।' आप देख सकते हैं कि संक्षेपण से वाक्य सुगठित और सुंदर हो गया है।

आइए, अब कुछ और लंबे वाक्यों को देखें और उनका संक्षेपण करें। मान लीजिए आपके सामने यह वाक्य है :

'मैने तुम्हें खोजने के लिए बीहड़ वन, घने जंगल, पर्वत, कन्दराएँ, गिर-अंचल, नगर, ग्राम, देश, परदेश सभी की खाक छानी, सभी जगह तुम्हें खोजा, पर निराशा ही हाथ लगी।'

इस वाक्य में जो बात 'सभी जगह' के द्वारा कही गई है, उसी का वर्णन 'बीहड़ वन, घने जंगल, पर्वत, कन्दराएँ, गिरि-अंचल, नगर, ग्राम, देश, परदेश' के द्वारा किया गया है। लेखन में भावों को प्रभावपूर्ण बनाने में इस शैली का अपना महत्व है, पर संक्षेपण करते समय इस प्रकार के वर्णनात्मक विवरणों या ब्यौरों को छोड़ा जा सकता है। संक्षेपण के इस नियम को ध्यान में रखकर आप उपरिलिखित वाक्य को इस प्रकार लिख सकते हैं : 'मैंने तुम्हें सब जगह खोजा, पर निराशा ही हाथ लगी।' वास्तव में यह उक्त वाक्य का संक्षेपण है।

संक्षेपण करते समय कई बार वाक्यों का रूप बदलना पड़ता है — व्याकरणिक दृष्टि से वाक्य-गठन में परिवर्तन की आवश्यकता पड़ती है। लंबे-लंबे मिश्रित और संयुक्त वाक्यों को साधारण वाक्यों में बदल लेना संक्षेपण की दृष्टि से उपयोगी है। उदाहरण के लिए आप इस वाक्य को देखिए : "अणु में वह शक्ति है, जिससे मानवता का कल्याण और सर्वनाश दोनों संभव है।" यदि आप इसे साधारण वाक्य में बदल दें तो इसकी शब्द-संख्या कम हो जाएगी और इसका यह रूप हो जाएगा: "आणविक शक्ति से मानवता का कल्याण और सर्वनाश संभव है।"

कुछ वाक्य उपवाक्यों या वाक्य-खंडों के योग से बने होते हैं। संक्षेपण करते समय इन उपवाक्यों या वाक्य-खंडों को छोड़ कर वाक्यों को संक्षिप्त करना पड़ता है। जैसे यह वाक्य देखिए : "यह वही महाविद्यालय है जिसका शताब्दी समारोह गत वर्ष मनाया गया था।" इसे आप यह रूप दे सकते हैं - "गत वर्ष इसी महाविद्यालय का शताब्दी समारोह मनाया गया था।"

संक्षेपण करते समय केवल मिश्रित और संयुक्त वाक्यों को ही नहीं, कभी-कभी छोटे-छोटे साधारण वाक्यों को भी बदलना पड़ता है। कई साधारण वाक्यों को जोड़कर एक वाक्य बना लेने से उनकी शब्द संख्या कम हो जाती है। मान लीजिए आपके सामने यह अंश है : "चन्द एक कुशल कवि थे। वे एक महान योद्धा तथा तपस्वी साधक भी थे। चन्द ने पृथ्वीराज रासो की रचना की।" इस अंश को आप इस रूप में लिख सकते हैं : "पृथ्वीराज रासो के रचयिता चन्द एक कुशल कवि, महान् योद्धा तथा तपस्वी साधक थे।"

संक्षेपण के विषय में एक अन्य जानने योग्य बात यह है कि यह हमेशा परोक्ष कथन में होता है अर्थात् संक्षेपण करते समय अन्य पुरुष का प्रयोग होता है— उत्तम या मध्यम पुरुष का नहीं। इसके अतिरिक्त संवादात्मक कथनों का संक्षेपण करते समय उन्हें परोक्ष कथनों में बदलना पड़ता है। उदाहरण के लिए आप निम्नलिखित अंश को देखिए :

> स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने एक दिन प्रार्थना करते हुए जगदम्बा से कहा, 'हे जगन्माता! मुझ में न विद्या है, न बुद्धि, न किसी शास्त्र का ज्ञान। मैं तो तेरी संतानों में परम मूर्ख ही हूँ। अब यही प्रार्थना है कि तू कृपा करके सभी धर्मों तथा सभी शास्त्रों का सारतत्व मुझे समझा दे।'

आप देखते हैं कि यह अंश उत्तम पुरुष में है। इस अंश में स्वामी रामकृष्ण परमहंस की विनम्रता और निरभिमानता (अहंकारहीनता) की अभिव्यक्ति हुई है, अतः इस अंश का संक्षेपण आप इन शब्दों में कर सकते हैं :

> स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने विनम्र और अहंकार रहित शब्दों में जगदम्बा से प्रार्थना की कि वह उसे सब धर्मों और सब शास्त्रों का सार समझा दे।

इस उदाहरण में आप देखते हैं कि मूल अंश के शब्दों का कम-से-कम प्रयोग करते हुए अपने शब्दों में संक्षेपण करने का प्रयास किया गया है। संक्षेपणकर्त्ता को चाहिए कि वह अपने शब्दों में संक्षेपण करे और मूल अंश से केवल उन्हीं शब्दों को ले जिन्हें छोड़ना उसके लिए संभव न हो।

अब तक आपने वाक्यों के संक्षेपण की प्रक्रिया या विधि सीखी है। इस विधि का प्रयोग कर आप किसी अनुच्छेद या पैराग्राफ का संक्षेपण भी कर सकते हैं, पर अनुच्छेद के संक्षेपण में कुछ और बातों का ध्यान रखना जरूरी है, जिनकी चर्चा आगे की जाएगी। फिलहाल आप निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़िए-

> मेहता ने अपना भाषण जारी रखते हुए कहा — "देवियों! मैं यह बिलकुल नहीं मानता कि स्त्री और पुरुष में कोई विभिन्नता है। इनमें जो समान शक्तियाँ, समान प्रवृत्तियाँ हैं उनका वर्णन करने के लिए मेरा एक मुख काफी नहीं है। स्त्री, पुरुष से उतनी ही श्रेष्ठ है, जितना प्रकाश अंधेरे से। मैं कहता हूँ सारा अध्यात्म और योग एक तरफ और नारियों का त्याग एक तरफ।"

यह अनुच्छेद मेहता (प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' का एक पात्र) के भाषण का एक अंश है। यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि जब कोई वक्ता व्याख्यान देता है तो श्रोताओं को प्रभावित करने के लिए वह सामान्य बोलचाल से भिन्न शब्दावली का प्रयोग करता है। अपने भाषण को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए कभी वह अलंकृत भाषा का प्रयोग करता है तो कभी लफ़्फ़ाज़ी अथवा वाग्जाल का सहारा लेता है। ऐसे अंशों का संक्षेपण करने के लिए उन्हें दो-तीन बार पढ़ लेना चाहिए। यों भी संक्षेपण का यह नियम है कि जिस अंश का संक्षेपण करना हो, उसे दो-तीन बार पढ़ लिया जाए ताकि उसके मुख्य विचार या भाव समझ में आ जाएँ। पढ़ने के बाद मूल बात (कथ्य) को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। संक्षेपण करते समय दृष्टि मूल कथ्य पर टिकी रहनी चाहिए। आलंकारिक प्रयोगों, उदाहरणों तथा कम महत्व के विचारों को छोड़ देना चाहिए तथा सरल भाषा में संक्षेपण करना चाहिए। संक्षेपण करने के लिए मुख्य बातों को क्रम से लिख लेना या एक संक्षिप्त-सी रूपरेखा बना लेना भी उपयोगी रहता है। मुहावरों, कहावतों या कुछ शब्द-समूहों के स्थान पर उनके समान अर्थ वाले किसी एक शब्द का प्रयोग भी संक्षेपण में उपयोगी हो सकता है।

अब आप मेहता के भाषण के उक्त अंश को देखिए। आप देखते हैं कि उक्त अंश की भाषा अलंकृत है। "मेरा एक मुख काफी नहीं है" "स्त्री, पुरुष से उतनी ही श्रेष्ठ है जितना प्रकाश अंधेरे से" आदि कथनों की भाषा आलंकारिक है। वक्ता ने वाग्जाल अथवा लफ़्फ़ाज़ी का भी सहारा लिया है और अपनी बात को बढ़ाचढ़ाकर लाग-लपेट के साथ प्रस्तुत किया है। उदाहरण के लिए भाषण के पहले वाक्य को देखा जा सकता है। संक्षेपण करते समय अलंकृत भाषा और वाग्जाल (लफ़्फ़ाज़ी) से बचना होता है। इस अंश का संक्षेपण करने के पूर्व इसके मुख्य बिंदुओं को इस प्रकार लिखा जा सकता है—

> मेहता का भाषण ..... स्त्री पुरुष की शक्तियों, प्रवृत्तियों में समानता ..... त्याग के कारण नारी श्रेष्ठ।

इस रूपरेखा के आधार पर विवेच्य अंश का संक्षेपण आप इस प्रकार कर सकते हैं :

> अपने भाषण में मेहता ने शक्तियों-प्रवृत्तियों की दृष्टि से तो स्त्री-पुरुषों को समान बताया, किंतु त्याग के कारण उसे पुरुष से श्रेष्ठ बताया।

इस प्रकार आप इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि संक्षेपण में आलंकारिक शब्दावली और वाग्जाल के स्थान पर तथ्यात्मक शब्दावली का प्रयोग किया जाता है।

बोध प्रश्न– 1

1) 'संक्षेपण' का शाब्दिक अर्थ क्या है ? एक वाक्य में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

2) संक्षेपण का आशय तीन पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) संक्षेपण के किन्हीं दो लाभों का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

अभ्यास– 1

1) निम्नलिखित वाक्य में प्रयुक्त अनावश्यक शब्दों को रेखांकित कीजिए :

श्यामू पहनने-ओढ़ने के कपड़े इधर से उधर और उधर से इधर रखने में प्रतिदिन तीन-चार घंटे का समय नष्ट करता है।

2) निम्नलिखित वाक्य का संक्षेपण कीजिए :

"महारानी को गहरी ठेस लगी, उसका दर्प चूर-चूर हो गया, हृदय टूट गया, स्वप्न भंग हो गया, आशाओं पर तुषारापात हो गया, सारे अरमान झुलस गए, वह व्यथा से तिलमिला उठी, अपमान से जल उठी, तिरस्कार से क्षुब्ध हो गई।"

3) संक्षेपण की दृष्टि से निम्नलिखित गद्यांश की रूपरेखा बनाइए :

मनुष्य (व्यक्ति) एक सामाजिक प्राणी है। अत्यंत प्राचीन काल से व्यक्ति और समाज का परस्पर घनिष्ठ संबंध चला आ रहा है। दोनों को एक दूसरे से पृथक नहीं किया जा सकता। व्यक्ति के बिना समाज नहीं है और समाज के बिना व्यक्ति का जीवन कठिन

या समाज की रक्षा के लिए व्यक्ति को सर्वस्व त्याग देना चाहिए? किसी समय समाज को अधिक महत्व दिया गया तो कभी इस विचार ने जोर पकड़ा कि समाज की रचना अन्ततः व्यक्ति के लिए ही तो हुई है। इस प्रकार व्यक्तिवाद और समाजवाद का द्वंद्व निरंतर चलता रहा है।

4) निम्नलिखित गद्यांश का संक्षेपण लगभग एक-तिहाई शब्दों में कीजिए :

कविता को प्रभावोत्पादक बनाने के लिए शब्दों को यथा-स्थान रखने की बहुत आवश्यकता है। किसी मनोविकार या दृश्य के वर्णन में ढूँढ़-ढूँढ़कर ऐसे शब्द रखने चाहिए जो सुनने वालों की आँखों के सामने वर्णित विषय का एक चित्र-सा खींच दे। मनोभाव चाहे कैसा ही अच्छा क्यों न हो, यदि उसे तद्नुकूल शब्दों में प्रकट नहीं किया जाएगा तो उसका प्रभाव जाता रहेगा। इसलिए कवि को चाहिए कि वह शब्दों को विषयानुकूल चुनकर इस क्रम से रखे जिससे, उसके मन का भाव पूर्ण रूप से व्यक्त हो जाए।

24.3 भाव-पल्लवन

आप 'संक्षेपण' के विषय में जान चुके हैं। आप जानते हैं कि 'संक्षेपण' में किसी विस्तृत अंश को संक्षिप्त अथवा छोटा किया जाता है। 'भाव-पल्लवन' संक्षेपण का ठीक उलटा है। 'पल्लवन' का शाब्दिक अर्थ है 'विस्तार करना'। अतः 'भाव-पल्लवन' का अर्थ है किसी सूत्र-वाक्य, उक्ति, सूक्ति, कहावत, काव्य-पंक्ति आदि में छिपे भावों को विस्तारपूर्वक उजागर करना। इस शब्द के लिए अंग्रेजी में 'एम्पलिफिकेशन' (Amplification), 'एक्सपेंशन' (Expansion) आदि शब्दों का प्रयोग होता है।

24.3.1 भाव-पल्लवन का महत्व

बोलने-लिखने में भाव-पल्लवन का महत्वपूर्ण स्थान है। सामान्य से सामान्य वाक्यों में भी हम इसका उपयोग करते हैं। मान लीजिए आपने कहा— 'वह रोया'। केवल इतना कहने से आपकी बात स्पष्ट नहीं होती। श्रोता की जिज्ञासा बनी रहती है कि वह क्यों रोया? इस जिज्ञासा को शांत करने के लिए आपको उपरिलिखित वाक्य का विस्तार अथवा पल्लवन करना पड़ता है और आप कहते हैं— 'वह खिलौने के लिए रोया।' इस प्रकार आप देखते हैं कि सामान्य से सामान्य वाक्य में भी वस्तु अथवा भाव के विस्तार की अपेक्षा रहती है। कभी-कभी आप कथ्य को अलंकृत अथवा सुंदर रूप में पेश करने के लिए वाक्यों में पल्लवन की जरूरत महसूस करते हैं। उदाहरण के लिए यदि आप कहें कि 'वह भागा' तो इससे आपको संतोष नहीं होगा। इस वाक्य का पल्लवन करते हुए आप इसे और सुंदर रूप में इस प्रकार कहना चाहेंगे — 'वह हिरन की तरह भागा'। इस प्रकार पल्लवन के मूल में वस्तु अथवा भाव के विस्तार और उसे अधिक विकसित एवं अलंकृत करने की प्रवृत्ति काम करती है।

हम यह भी देखते हैं कि कम शब्दों या एक वाक्य में कहे या लिखे गए भावों और विचारों को हर आदमी आसानी से नहीं समझ पाता। हमारे सामने कभी-कभी कुछ ऐसे सुगठित और अर्थगर्भित वाक्य भी आ जाते हैं कि यदि उनका विस्तार न किया जाए तो वे हमारी समझ से बाहर रहते हैं। ऐसी स्थिति में विचार या भाव के तार-तार को अलग कर समझाने की आवश्यकता पड़ती है। ऐसी हजारों सूक्तियाँ जिनका अर्थ-विस्तार किए बिना उनका पूरा भाव हमारे पल्ले नहीं पड़ता। अध्यापक तो कक्षाओं में अर्थ-विस्तार के द्वारा विषय को स्पष्ट करते ही हैं, मां-बाप को भी अपने बच्चों के प्रश्नों या जिज्ञासाओं का उत्तर देने के लिए प्रायः इसका सहारा लेना पड़ता है। हम सब भी इसके अपवाद नहीं है। जीवन में कभी-न-कभी ऐसी स्थिति अवश्य आ जाती है जब किसी के वाक्य को सुनकर हम कह उठते हैं - 'मैं आपका मतलब समझा नहीं, जरा खोल कर बताओ।' इस कथन से पल्लवन की उपयोगिता प्रकट होती है। इससे यह भी स्पष्ट है कि भाव-पल्लवन में व्याख्या-विवेचन की जरूरत होती है।

24.3.2 भाव-पल्लवन की प्रक्रिया या विधि

भाव-पल्लवन की प्रक्रिया या विधि को उदाहरणों के द्वारा आप आसानी से समझ सकते हैं। ऊपर कुछ वाक्यों के उदाहरण आप देख चुके हैं। उन उदाहरणों में आपने देखा है कि वस्तु या भाव के विस्तार तथा अलंकरण के द्वारा उन वाक्यों का कुछ पल्लवन हो गया था। अब कुछ और उदाहरण देखिए।

मान लीजिए कि आपको 'देशप्रेम' शीर्षक का पल्लवन करना है। आप इसके विषय में सोचिए और इस विषय के विभिन्न पहलुओं के बारे में एक संक्षिप्त-सी रूपरेखा बना लीजिए। आप सोचिए कि किन-किन बिंदुओं का विस्तार किया जा सकता है। सोचने पर आप यह संक्षिप्त-सी रूपरेखा बना सकते हैं।

> देश-प्रेम का अर्थ - देश से प्रेम, देश की उन्नति के लिए प्रयत्नशील होना, आवश्यकता पड़ने पर देश के लिए मर मिटना ..... कुछ देश-प्रेमियों के उदाहरण ..... देश-प्रेम के संबंध में कवियों की उक्तियाँ।

पल्लवन के लिए बहुत बड़ी रूपरेखा बनाने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि यह निबंध नहीं है। यों जिस विषय का पल्लवन किया जाता है, उस पर निबंध भी लिखा जा सकता है। पल्लवन निबंध की अपेक्षा संक्षिप्त होता है। यह प्रायः एक-दो अनुच्छेद का होता है। इसलिए इसमें चिन्तन के दो-तीन बिंदु लेकर उनका क्रमिक विकास किया जाता है। जैसे 'देश-प्रेम' का पल्लवन करते समय उसके अर्थ के विषय में जो विभिन्न विचार आपके मन में उठें, उन्हें क्रमबद्ध रूप से लिख दीजिए, फिर कुछ देश-प्रेमियों के उदाहरण दीजिए और अंत में देश-प्रेम के महत्व को स्पष्ट करते हुए किसी कवि की उक्ति से इसे समाप्त कीजिए। पल्लवन कवि की उक्ति से समाप्त किया जाए, यह आवश्यक नहीं है, पर पल्लवन करते समय यदि आप किसी कवि की उक्ति या किसी महान लेखक या विचारक की उक्ति से उसका अंत कर सकें तो यह सोने में सुहागे वाली बात होगी। ऊपर बताए गए नियमों का प्रयोग करते हुए आप 'देश-प्रेम' का पल्लवन (अपनी बनायी रूपरेखा के आधार पर) कुछ इस प्रकार कर सकते हैं -

> देश-प्रेम का सामान्य अर्थ है देश से प्रेम करना। देश से प्रेम करना प्रत्येक व्यक्ति का पुनीत कर्त्तव्य है। देश की उन्नति के लिए हर संभव प्रयत्न करना, देश की सीमाओं की सुरक्षा करना और देश को शत्रुओं के चंगुल से मुक्त कराने का प्रयत्न करना— देश-प्रेम के ही विभिन्न रूप हैं। सच्चा देश-प्रेमी जन्मभूमि से जननी के समान प्रेम करता है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है कि जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान है — 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसा'। आवश्यकता पड़ने पर देश के लिए मर-मिटना देश-प्रेम की पराकाष्ठा है। ऐसे वीरों को युग-युगों तक याद किया जाता है। चन्द्रशेखर आजाद, शहीद भगत सिंह, महात्मा गाँधी, जवाहर लाल नेहरू जेसे देश-प्रेमी कभी मर नहीं सकते। जिनके हृदय में देश-प्रेम का भाव है, वे धन्य हैं और जो इस भाव से रहित हैं, वे हृदयहीन हैं। किसी कवि ने ठीक ही कहा है—
>
> > जो भरा नहीं है, भावों से बहती जिसमें रस-धार नहीं।
> > वह हृदय नहीं है, पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।

इस उदाहरण से आप समझ सकते हैं कि पल्लवन करते समय पल्लवन के लिए दिए गए शब्द, वाक्य, सूक्ति, कहावत आदि के भीतर निहित मूल भाव को समझना आवश्यक है। मूल भाव या विचार को समझ लेने के बाद उसके विभिन्न बिंदुओं को क्रम से लिखा जाता है। आवश्यक होने पर अपने कथन की पुष्टि उदाहरणों, काव्यांशों अथवा उद्धरणों से करते चलते हैं। भाव पल्लवन का अंत यदि किसी संबद्ध महत्वपूर्ण उक्ति या काव्यांश से किया जाए तो वह अधिक प्रभावशाली बन जाता है।

ही। पल्लवन उत्तम या मध्यम पुरुष में न होकर अन्य पुरुष में ही होता है अर्थात् इसमें न तो 'मैं', 'तुम' शैली का प्रयोग होता है और न संवाद-शैली का ही।

उदारहण के रूप में जैसे यहाँ आपने 'देश-प्रेम' का पल्लवन किया है, उसी प्रकार किसी सूक्ति, काव्य-पंक्ति, लोकोक्ति आदि का पल्लवन भी आप कर सकते हैं।

बोध प्रश्न– 2

1) पल्लवन का शाब्दिक अर्थ क्या है? एक वाक्य में लिखिए।

.....

2) भाव-पल्लवन के मूल में काम करने वाली प्रवृत्तियों के संदर्भ में नीचे कुछ कथन दिए जा रहे हैं। इनमें से सही कथनों के सामने (√) का चिह्न लगाइए।

i) भाव-पल्लवन के मूल में संक्षेप की प्रवृत्ति काम करती है। ☐

ii) भाव-पल्लवन के मूल में वस्तु अथवा भाव के विस्तार की प्रवृत्ति काम करती है। ☐

iii) भाव-पल्लवन के मूल में रोष की प्रवृत्ति रहती है। ☐

iv) भाव-पल्लवन के मूल में अलंकरण की प्रवृत्ति रहती है। ☐

3) दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द-प्रयोग से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

i) भाव-पल्लवन संक्षेपण का ..... है। (समानार्थी/विपरीतार्थी)

ii) भाव-पल्लवन में किसी सूत्र-वाक्य, उक्ति, सूक्ति, कहावत या काव्य-पंक्ति में छिपे अर्थ को..... उजागर करते हैं। (विस्तारपूर्वक/संक्षेप में)

अभ्यास– 2

1) 'पुस्तकालय' विषय के पल्लवन के लिए एक संक्षिप्त रूपरेखा तैयार कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) निम्नलिखित रूपरेखा के आधार पर 'का बरखा जब कृषी सुखानी' का भाव-पल्ल्वन कीजिए : प्रत्येक कार्य के करने का कोई-न-कोई उद्देश्य..... उद्देश्य-प्राप्ति के लिए कार्य का समय पर किया जाना आवश्यक..... समय पर चूक जाने पर पछताना पड़ता है..... अपने कथन की पुष्टि के लिए कुछ उदारहण..... सफलता के लिए समय की पहचान और क्रिया आवश्यक।

3) वस्तु अथवा भाव का विस्तार करते हुए 20-30 शब्दों में अपूर्ण वाक्यों का पल्लवन कीजिए :

i) यह वसंत ऋतु है। इस ऋतु में प्रकृति का कण-कण .....

.....

.....

.....

.....

ii) आत्म-निर्भरता एक ऐसा गुण है कि इसके द्वारा .....

.....

.....

.....

.....

.....

iii) विपत्ति मित्रों की कसौटी है। विपत्ति के क्षणों में ही सच्चे मित्रों की.....

.....

.....

.....

.....

.....

4) भक्त ने भगवान को **सब जगह** ढूँढा और अंत में इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि वह दीन-दुखियों की सेवा में है --- इस वाक्य में प्रयुक्त **'सब जगह'** का तीन पंक्तियों में पल्लवन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

5. 'थोथा चना बाजे घना' का भाव-पल्लवन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

24.4 निबंध-लेखन

इस पाठ्यक्रम के प्रथम खंड की पाँचवी इकाई में आप निबंध-रचना के विषय में कुछ जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। आप संक्षेपण और पल्लवन का भी अभ्यास कर चुके हैं। अब आप निबंध-लेखन की प्रक्रिया समझेंगे और निबंध लिखने का अभ्यास करेंगे।

24.4.1 निबंध का स्वरूप और प्रकार

निबंध शब्द का अर्थ है— निः (विशेष रूप से) बंध (बंधा हुआ)। अर्थात् इसमें सुंदर ढंग से बंधे होने या गठित होने का अर्थ निहित है। इस प्रकार निबंध किसी एक विषय पर लिखी गई लघु आकार की सुगठित रचना होती है। इसमें क्रमबद्धता रहती है तथा विषय से संबद्ध विभिन्न बिंदुओं का विस्तार किया जाता है। विषय के पक्ष अथवा विपक्ष में चिंतन के जो भी बिंदु हो सकते हैं, उन पर सधी हुई भाषा में निबंध-लेखक विचार करता है। निबंध-लेखन की शैली निजी होती है तथा इसमें लेखक का व्यक्तित्व भी किसी-न-किसी रूप में आ ही जाता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि निबंध में निजता की छाप होती है।

मुख्यरूप से निबंध के दो प्रकार स्वीकार किए गए हैं : (1) विषय-प्रधान अथवा विचारात्मक निबंध तथा (2) विषय प्रधान अथवा भावात्मक या ललित निबंध। विषय-प्रधान निबंधों में विचारों की प्रधानता होती है और विषय या भावप्रधान निबंधों में भावों की। यहाँ 'प्रधान' शब्द ध्यान देने योग्य है। कोई भी निबंधकार न तो केवल विचारों के आधार पर निबंध की रचना करता है और न केवल भावों के आधार पर ही। वह विचारों और भावों को एक साथ लेकर चलता है, पर कभी उसके लेखन में विचारों की प्रधानता हो जाती है और कभी भावों की। जब निबंध में चिंतन या विचारों की प्रधानता रहती है तो उसे विचारात्मक निबंध कहते हैं। इस प्रकार के निबंधों में क्रमबद्ध चिंतन के द्वारा निबंधकार पाठकों तक अपनी बात पहुँचाता है। भावात्मक या ललित निबंधों में हृदय के आवेग या भावों की प्रधानता होती है। लेखक भावावेग में बह जाता है और पाठक के साथ निजता स्थापित कर लेता है। इस प्रकार के लेखन में कई बार विचारों की क्रमबद्धता की भी चिंता नहीं की जाती। निबंधकार अपने पूर्वज्ञान का उपयोग करते हुए बीच-बीच में अन्य जानकारियाँ भी देता चलता है और प्राचीन साहित्य के उद्धरण भी। वह भावना के प्रवाह में बह जाता है और उसे जो बात कौंधती जाती है, उसका समावेश वह अपने निबंध में करता जाता है। इस प्रकार के निबंध सभी व्यक्ति नहीं लिख पाते— कोई कवि-हृदय ही इस प्रकार के निबंधों में सफलता प्राप्त करता है। इन्हें ललित या व्यक्ति व्यंजक निबंध भी कहते हैं।

जहाँ तक सामान्य कोटि के विचारात्मक निबंधों का प्रश्न है, कोई भी व्यक्ति थोड़े-से प्रयत्न और अभ्यास से इस कोटि के निबंधों की रचना कर सकता है। इस प्रकार के निबंधों में सोच-समझ की आवश्कता होती है। विचारात्मक निबंधों में क्रमबद्धता का ध्यान रख कर केंद्र-बिंदु का विस्तार किया जाता है। ऐसे निबंधों के लेखन में विषय से संबद्ध ग्रंथों का अध्ययन भी उपयोगी सिद्ध होता है।

यहाँ हम अपनी दृष्टि विचारात्मक निबंधों तक सीमित रखेंगे और इस प्रकार के निबंधों की लेखन-प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त कर उनके लिखने का अभ्यास करेंगे।

24.4.2 निबंध-लेखन की प्रक्रिया

आप समझ चुके हैं कि निबंध पर निबंध-लेखक के व्यक्तित्व की छाप होती है और हर निबंध-लेखक अपने ढंग से निबंध लिख सकता है, अतः इसके लेखन की विधि को नियमों की चार दीवारी में पूरी तरह नहीं बाँधा जा सकता। फिर भी, आपकी सुविधा के लिए इसकी प्रक्रिया को संक्षेप में समझाया जा रहा है।

निबंध किसी भी विषय पर लिखा जा सकता है। विषय अनन्त हो सकते हैं और इनमें से कोई भी विषय चुनने के लिए निबंध-लेखक स्वतंत्र है। निबंध लिखने के लिए आत्म-विश्वास का होना जरूरी है-- आपके मन में यह दृढ़ विश्वास होना चाहिए कि आप स्वयं निबंध लिख सकते हैं। आपको अपनी योग्यता और विचार-शक्ति पर भरोसा होना चाहिए— तभी आप अच्छा निबंध लिख सकेंगे। आप जीवन में जो कुछ देखते हैं या आपके जीवन में जो घटनाएँ घटती हैं, उनमें से किसी पर भी आप निबंध लिख सकते हैं।

निबंध लिखने के पूर्व यदि उसकी एक संक्षिप्त-सी रूपरेखा बना ली जाए तो उससे निबंध-लेखन में सुविधा रहती है। किसी भी निबंध के तीन भाग होते हैं— (1) भूमिका (2) मुख्य

अर्थात् केंद्रीय कथ्य के अनेक बिंदु हो सकते हैं। विषय के पक्ष अथवा विपक्ष में जितने भी चिंतन-बिंदु हो सकते हों, रूपरेखा बनाते समय उन्हें अलग-अलग लिख लेना चाहिए और लेखन के समय प्रत्येक बिंदु का प्रायः बिना शीर्षक दिए विस्तार करना चाहिए।

आइए, अब एक उदाहरण के द्वारा निबंध-लेखन की प्रक्रिया को समझें। संभवतः आप प्रतिदिन दूरदर्शन देखते होंगे। यदि आप प्रतिदिन दूरदर्शन न भी देखते हों, तो भी कभी-न-कभी आपने दूरदर्शन पर कुछ कार्यक्रम अवश्य देखे होंगे। मान लीजिए आपको 'भारत में दूरदर्शन का महत्व' विषय पर निबंध लिखना है। सबसे पहले आप इसकी रूपरेखा बना लीजिए। भूमिका और उपसंहार के बीच में निबंध का मुख्य भाग आता है, जिसके विभिन्न पहलुओं को आप रूपरेखा में रखेंगे। चिंतन या विचार करने पर आपके मस्तिष्क में तुरंत यह बात कौंधती है कि इसमें दूरदर्शन के लाभों की चर्चा होनी चाहिए। दूरदर्शन का पहला महत्व मनोरंजन की दृष्टि से है, फिर ज्ञानवर्द्धन की दृष्टि से। शिक्षा के प्रचार-प्रसार, सरकारी नीतियों के प्रचार-प्रसार, व्यापार-वृद्धि में सहायता आदि की दृष्टि से भी इसका महत्व है। इन सब बिंदुओं का उल्लेख निश्चय ही आप अपनी रूपरेखा में करना चाहेंगे। इन विचार-बिंदुओं के कुछ उपबिंदु भी हो सकते हैं। मसलन ज्ञानवर्द्धन की दृष्टि से दूरदर्शन के लाभों की चर्चा करते समय आप प्रमुख घटनाओं, महापुरुषों, पशु-पक्षियों, वैज्ञानिक आविष्कारों, प्रश्नमंचों आदि की चर्चा करना चाहेंगे। लाभों के साथ आप इसकी हानियों पर भी इस बिंदु में विचार करना चाहेंगे। लीजिए 'भारत में दूरदर्शन का महत्व' की रूपरेखा तैयार हो गई। इसे आप इस प्रकार लिख सकते हैं :

भारत में दूरदर्शन का महत्व

रूपरेखा

1) भूमिका

2) दूरदर्शन का महत्व

   i) मनोरंजन की दृष्टि से

   ii) ज्ञानवर्द्धन की दृष्टि से — प्रमुख घटनाओं की जानकारी, पशु-पक्षी जगत, अंतरिक्ष, सागर आदि के अज्ञात रहस्यों की जानकारी, विज्ञान-विषयक जानकारी, प्रश्नावली, प्रश्न-मंच आदि के द्वारा ज्ञानवर्द्धन।

   iii) शिक्षा के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से

   iv) शासकीय नीतियों के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से

   v) व्यापारिक दृष्टि से

3) दूरदर्शन की सीमाएँ

4) उपसंहार

इस रूपरेखा से स्पष्ट है कि निबंध का मुख्य भाग सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इसमें केंद्र-बिंदु अथवा कथ्य का अनेक दृष्टियों से विस्तार किया जाता है। पल्लवन का उपयोग करते हुए आप इन चिंतन-बिंदुओं का सहज ही विस्तार कर सकते हैं।

सबसे पहले आपको विषय की भूमिका लिखनी है। भूमिका-लेखन के अनेक प्रकार हो सकते हैं। कुछ निबंधकार भूमिका का प्रारंभ काव्यात्मक पंक्तियों से करते हैं तो कुछ प्रारंभ में विषय के महत्व पर प्रकाश डालते हैं। वास्तव में निबंध का प्रारंभ आकर्षक ढंग से होना चाहिए, क्योंकि आकर्षक प्रारंभ पाठक को निबंध पढ़ने के लिए प्रेरित करेगा।

आप 'भारत में दूरदर्शन का महत्व' की भूमिका लिखते समय वर्तमान काल में विज्ञान के महत्व को रेखांकित करते हुए इसे दूरदर्शन से जोड़ सकते हैं। इस विषय की भूमिका यों तो हर लेखक अपने ढंग से लिख सकता है, पर इसका एक रूप यह हो सकता है :

> आज विज्ञान का युग है। चारों ओर वैज्ञानिक आविष्कारों की दुदुंभी बज रही है। विज्ञान ने जहाँ समय और दूरी पर विजय पायी है, वहीं मनुष्य के जीवन को सुख-सुविधा-सम्पन्न भी बनाया है। मानव-जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं, जहाँ विज्ञान ने प्रवेश न किया हो। आज के व्यस्त जीवन में मनुष्य के पास मनोरंजन के लिए भी समय नहीं है। उसे ऐसे साधन की आवश्यकता थी जो घर बैठे उसका मनोरंजन कर सके। दूरदर्शन के आविष्कार से विज्ञान ने मनुष्य की इसी आवश्यकता की पूर्ति की है।

इस प्रकार 'भूमिका' सीधे-सीधे मुख्य विषय से जुड़ती है। ऐसी भूमिका का कोई अर्थ नहीं जो अनावश्यक बातों में उलझ कर रह जाए और मुख्य विषय से न जुड़ सके।

भूमिका के बाद निबंध के मुख्य भाग का लेखन करना होता है। जैसा कि हम बता चुके हैं, निबंध के इस भाग में केंद्र का विस्तार करना होता है। केंद्र का विस्तार करने के लिए विभिन्न चिंतन-बिंदुओं पर, उनके महत्व के अनुसार एक या दो अनुच्छेद लिखे जा सकते हैं। यह आवश्यक है कि इन अनुच्छेदों में व्यक्त विचार तर्कसम्मत और स्वाभाविक हों तथा उनका क्रमबद्ध विकास हुआ हो। चूँकि यह निबंध का मुख्य भाग है, अतः यहाँ विषय के विभिन्न पहलुओं के पल्लवन की आवश्यकता होती है। महत्व के अनुसार जो बात पहले आनी चाहिए, उसे पहले लिखना चाहिए। निबंध के इस भाग में विषय के पक्ष में पड़ने वाले तर्क पहले लिख देने चाहिए। विषय के विपक्षी तर्कों की चर्चा भी अंत में तर्कसंगत ढंग से कर देनी चाहिए।

अब आप जो निबंध लिख रहे थे, उसके मध्य भाग के एक-दो बिंदुओं पर विचार कर लीजिए। मान लीजिए आप 'मनोरंजन' की दृष्टि से दूरदर्शन के महत्व को रेखांकित करना चाहते हैं। आप लिख सकते हैं :

> दूरदर्शन मनोरंजन का सस्ता, और सशक्त साधन है। दूरदर्शन के कार्यक्रमों में मनोरंजन का बहुत ध्यान रखा जाता है। प्रतिदिन कुछ कार्यक्रम ऐसे अवश्य होते हैं जो जनता के मन को मोह लेते हैं और जिनका लोग बेसब्री से इंतजार करते हैं। प्रति सप्ताह हिंदी फीचर फिल्म, प्रादेशिक फिल्म, चित्रहार, चित्रमाला, नाटक, प्रहसन आदि के जो कार्यक्रम दूरदर्शन पर प्रदर्शित किए जाते हैं उनके द्वारा दर्शकों का भरपूर मनोरंजन होता है। मनोरंजन की दृष्टि से प्रदर्शित अनेक कार्यक्रम केवल मनोरंजन ही नहीं करते, शिक्षाप्रद भी होते हैं। मनोरंजन के साथ ज्ञानवर्द्धन, सूचना और शिक्षा दूरदर्शन की विशेषताएँ हैं। इन दिनों धारावाहिक रूप से प्रदर्शित 'महाभारत' और 'रामायण' का उपर्युक्त दृष्टि से विशेष महत्व है।

आपने देखा कि किस प्रकार भूमिका से चिंतन के अगले बिंदु को जोड़कर निबंध का विकास किया गया है। इसी प्रकार, चिंतन-बिंदुओं को जोड़ कर, उन्हें सिलसिलेवार लिखकर आप निबंध के मध्य या मुख्य भाग को पूरा कर सकते हैं। ऊपर हमने मनोरंजन की दृष्टि से दूरदर्शन के महत्व पर प्रकाश डाला है और अनुच्छेद के अंत में ज्ञानवर्द्धन और शिक्षा की चर्चा भी कर दी है। अब आप शेष विचार-बिंदुओं का इस प्रकार पल्लवन कीजिए कि न तो क्रम भंग हो और न चिंतन के प्रवाह में कोई बाधा ही पड़े।

निबंध का अंत आकर्षक ढंग से होना चाहिए। उपसंहार का अनुच्छेद मुख्य विषय से कटा हुआ नहीं होना चाहिए। उसे इस प्रकार लिखना चाहिए कि उसके बाद कुछ और लिखने की आवश्यकता न रह जाए। प्रत्येक निबंधकार की अपनी शैली होती है, अतः निबंध की समाप्ति का ढंग भी निजी होता है। कुछ निबंध-लेखक किसी उद्धरण से निबंध की समाप्ति करना ज्यादा पसंद करते हैं, तो कुछ किसी सुझाव-वाक्य से। कुछ अन्य चेतावनी-वाक्य से। कभी-कभी निबंध का अंत कुछ प्रश्न-वाक्यों और उनके संक्षिप्त उत्तर से भी कर दिया जाता है। आप इनमें से किसी भी प्रकार से निबंध का उपसंहार क्यों न करें, वह ऐसा अवश्य हो कि उससे चुने हुए विषय का वास्तविक महत्व और उसकी उपयोगिता भी रेखांकित हो सके। इन बातों का ध्यान रखते हुए आप अपने विषय अर्थात् 'दूरदर्शन का महत्व' का उपसंहार इस प्रकार कर सकते हैं :

दूरदर्शन निश्चय ही मनोरंजन और शिक्षा का सशक्त माध्यम है। किसी सिद्धांत अथवा विचार-धारा के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से भी इसकी उपयोगिता को अस्वीकार नहीं किया जा सकता, पर मूल प्रश्न यह है कि भारत जैसे निर्धन और विकासशील देश में वास्तव में इसकी कितनी उपयोगिता है? क्या इस देश के निर्धन ग्रामीण इसे खरीदने की स्थिति में हैं? यदि नहीं, तो इसका लाभ उन्हें कैसे मिलेगा? जब तक इन प्रश्नों का तर्कसंगत, व्यावहारिक समाधान नहीं ढूँढ़ लिया जाता, तब तक इस देश में दूरदर्शन का लाभ एक सीमित वर्ग को ही मिल सकेगा और यहीं इसके महत्व पर एक प्रश्न-चिह्न लग जाएगा।

आप देख चुके हैं कि निबंध-लेखन में अपने विचारों का क्रमिक विकास करते हुए उपसंहार तक पहुँचा जाता है और इसी के साथ निबंध समाप्त हो जाता है। निबंध की समाप्ति के बाद उसे एक बार फिर पढ़ लेना उपयोगी रहता है। इससे उसमें रह जाने वाली भूलों को सुधारा जा सकता है।

बोध प्रश्न– 3

1) दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्दों के प्रयोग से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

   i) निबंध किसी एक विषय पर लिखी गई..... आकार की रचना होती है। (लघु/बृहद्)

   ii) निबंध में विषय से संबद्ध विभिन्न बिंदुओं का ..... किया जाता है। (संकोच/विस्तार)

   iii) निबंध में लेखक ..... भाषा में विचार व्यक्त करता है। (बँधी/सधी)

   iv) निबंध-लेखक की शैली ..... होती है। (निजी/परायी)

2) निबंध के मुख्य दो प्रकार कौन-कौन से हैं?

.....

.....

.....

.....

अभ्यास– 3

1) 'साहित्य और समाज' शीर्षक निबंध की रूपरेखा बनाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) 'राष्ट्रभाषा हिंदी का महत्व' शीर्षक निबंध की भूमिका निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर तैयार कीजिए : राष्ट्र के लिए राष्ट्रभाषा आवश्यक ..... राष्ट्रीय चेतना की प्रतीक ..... राष्ट्रीय एकता के विकास में सहायक ..... राष्ट्रीय उन्नति का मूलाधार।

3) 'विद्यार्थी और अनुशासनहीनता' शीर्षक निबंध के अनेक चिंतन-बिंदु हो सकते हैं। विद्यार्थियों की अनुशासनहीनता के अनेक कारणों में से एक है— अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए राजनेताओं द्वारा छात्र-वर्ग का दुरुपयोग। आप इस चिंतन-बिंदु का पल्लवन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4) मान लीजिए आपने 'दहेज-प्रथा' विषय पर एक निबंध लगभग लिख लिया है। भूमिका-लेखन के अतिरिक्त इसके केंद्र बिंदु का विस्तार करते हुए आप इस समस्या के सामाजिक-आर्थिक कारणों की चर्चा भी कर चुके हैं। केवल 'उपसंहार' लिखने का कार्य शेष है। आप निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर लगभग 150 शब्दों में इस विषय का 'उपसंहार' कीजिए -

जनजागरण ..... युवक-युवतियों के मनोभावों में परिवर्तन ..... संस्कृति-सभ्यता और देश के गौरव से जुड़ा प्रश्न।

5) निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 500 शब्दों का निबंध लिखिए :

i) साहित्य की उपयोगिता

ii) शिक्षा का माध्यम : मातृभाषा

iii) साम्प्रदायिकता : एक अभिशाप

iv) नौकरी-पेशा नारी की समस्याएँ

v) विद्यार्थी और राजनीति

24.5 सारांश

- जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में 'संक्षेपण' का महत्व है। संक्षिप्तता, क्रमबद्धता, पूर्णता, भाषा की स्पष्टता और सरलता संक्षेपण के मुख्य गुण हैं। संक्षेपण मूल अंश के लगभग एक तिहाई आकार का होता है। आप समझ चुके हैं कि संक्षेपण करते समय अनावश्यक और पुनरावृत्त शब्दों या भावों को हटा दिया जाता है और इसमें मूल कथ्य की रक्षा की जाती है। आलंकारिक प्रयोगों, उदाहरणों, विवरणों आदि के मोह से इसमें मुक्त होना पड़ता है तथा मूल भाग में आए वाक्यों में परिवर्तन की आवश्यकता भी रहती है। इन बातों को ध्यान में रखकर आप संक्षेपण कर सकते हैं।

- 'भाव-पल्लवन' संक्षेपण का उलटा है। इसके मूल में वस्तु अथवा भाव के विस्तार तथा अलंकरण की प्रवृत्ति काम करती है। पल्लवन करने के लिए दिए गए विषय की एक संक्षिप्त-सी रूपरेखा बना लेना उपयोगी रहता है। इसमें चिंतन के दो-तीन बिंदुओं का विकास किया जाता है। अपने कथनों की पुष्टि उदाहरणों, उद्धरणों एवं काव्यात्मक पंक्तियों से की जाती है। इस प्रक्रिया को ध्यान में रखकर आप किसी कथन, सूक्ति, काव्य-पंक्ति, लोकोक्ति आदि का पल्लवन कर सकते हैं।

- 'निबंध' किसी एक विषय पर लिखी गई लघु आकार की अत्यंत सुगठित रचना है। इसमें विषय से संबद्ध विभिन्न बिंदुओं का क्रमबद्धता से विस्तार किया जाता है। निबंध लिखने से पूर्व दिए गए विषय की एक संक्षिप्त-सी रूपरेखा बना लेना उपयोगी रहता है। निबंध के तीन भाग होते हैं— (1) भूमिका (2) मुख्य भाग; और (3) उपसंहार। मुख्य भाग में चिंतन के अनेक बिंदुओं का विकास किया जाता है। निबंध-लेखन में यों तो संक्षेपण भी एक-सीमा तक उपयोगी है, पर भाव-पल्लवन की इसमें विशेष भूमिका है। वस्तुतः विभिन्न चिंतन-बिंदुओं का क्रमिक भाव-पल्लवन कर आप दिए गए विषय पर निबंध लिख सकते हैं।

24.6 शब्दावली

पुनरुक्ति : एक बार कही हुई बात को फिर कहना, एक ही विचार को अलग-अलग ढंग से बार-बार प्रकट करना, एक काव्य-दोष।

पुनरावृत्ति : किए हुए काम को फिर करना, कही हुई बात को फिर कहना या दुहराना।

पुनरावृत्त : फिर से कहा हुआ।

परोक्ष कथन : किसी व्यक्ति के कथन को उसी के शब्दों में न कह कर अन्य पुरुष की शैली में कहना। जैसे राम ने कहा, 'मैं जाता हूँ।' इस वाक्य को हिंदी में परोक्ष कथन के रूप में इस प्रकार लिखा जा सकता है : राम ने कहा कि मैं जाता हूँ।

अलंकार : वर्णन करने की वह रीति जिससे चमत्कार और रोचकता आ जाए; जैसे अनुप्रास, उपमा, रूपक आदि।

आलंकारिक : अलंकारों से युक्त।

अलंकृत : अलंकारों से युक्त, सुंदर।

अलंकरण : किसी चीज को अलंकारों से सजाना, सजावट।

वाग्जाल : बातों का आडंबर या व्यर्थ ही भाषा को अलंकृत करना या बातों तथा शब्दों की भरमार लफ़्फ़ाज़ी।

24.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना : डॉ. वासुदेवनन्दन प्रसाद, भारती भवन, एक्जिबीशन रोड, पटना-1.

संक्षेपीकरण : गणेशप्रसाद गुप्त, गुप्ता प्रकाशन, रैहगड़पुरा, करोलबाग, नई दिल्ली - 110 005.

24.8 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न - 1

1) 'संक्षेपण' का शाब्दिक अर्थ है संक्षिप्त अथवा छोटा करना।

3 i) श्रम और समय की बचत होती है तथा

ii) आवश्यक बातों को कम-से-कम शब्दों में प्रकट कर दिया जाता है।

बोध प्रश्न– 2

1) पल्लवन का शाब्दिक अर्थ है स्विस्तार करना रू।

2) ii) (√) iv) (√)

3) i) विपरीतार्थी ii) विस्तारपूर्वक

बोध प्रश्न– 3

1) i) लघु ii) विस्तार iii) सधी iv) निजी

2) i) विषय-प्रधान अथवा विचारात्मक निबंध

ii) विषय-प्रधान अथवा भावात्मक या ललित निबंध

अभ्यास– 1

1) पहनने-ओढ़ने के, और उधर से इधर, का समय

2) अपमानजनक व्यवहार से महारानी हतोत्साहित, निराश और दुःखी हो गयी।

3) मनुष्य (व्यक्ति) और समाज का अन्योन्याश्रित संबंध, व्यक्ति और समाज में कौन अधिक महत्वपूर्ण, कभी समाज और कभी व्यक्ति के महत्व का स्वीकार, दोनों की द्वंद्वात्मक स्थिति

4) कविता को प्रभावोत्पादक बनाने में विषयानुकूल शब्द-चयन का अत्यधिक महत्व है। कवि वर्ण्य-विषय का ऐसे शब्दों में वर्णन करे कि उसका एक चित्र पाठकों के सामने उपस्थित हो जाए।

अभ्यास– 2

1) पुस्तकालय का अर्थ ..... पुस्तकालयों के प्रकार : व्यक्तिगत और सार्वजनिक ..... पुस्तकालय के लाभ। (निर्देश : अभ्यास -2 तथा 3 के अभ्यास-प्रश्नों के उत्तर आप अपनी भाषा में लिखेंगे। इन उत्तरों का नीचे दिए गए नमूने के उत्तरों से ज्यों-का-त्यों मिलना आवश्यक नहीं है।

2) संसार में व्यक्ति जो भी कार्य करता है, उसका कोई-न-कोई उद्देश्य अवश्य होता है। बुद्धिहीन व्यक्ति भी निष्प्रयोजन कोई कार्य नहीं करते। कार्य प्रयोजन-सिद्धि या उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किया जाता है, पर इसके लिए यह आवश्यक है कि वह समय पर किया जाए। यदि कोई कार्य समय पर नहीं किया जाता तो उद्देश्य की प्राप्ति नहीं होती, फलतः पछताना पड़ता है। इस संदर्भ में गोस्वामी तुलसीदास की यह उक्ति सटीक है : 'का बरखा जब कृषी सुखानी'। सचमुच खेती सूख जाने के बाद वर्षा का होना, न होना बराबर है — उसका कोई लाभ नहीं। इसी प्रकार दीपक के बुझ जाने पर तेल का डालना, चोर के चोरी करके चले जाने के बाद मकान-मालिक का जागना या मरीज़ के मर जाने के बाद डाक्टर का आना कोई अर्थ नहीं रखता। वक्त को पहचान कर ठीक वक्त पर काम करने से ही उद्देश्य की पूर्ति संभव है। समय बीत जाने पर किसी काम को करना उसी प्रकार निरर्थक है जैसे कि खेती के सूख जाने पर वर्षा का होना।

3) i) यह वसंत ऋतु है। इस ऋतु में प्रकृति का कण-कण नया रूप धारण कर लेता है। वृक्ष, पौधे, पल्लव, लताएँ, पुष्प आदि वासंती पवन के स्पर्श से जैसे नव-

ii) आत्म-निर्भरता एक ऐसा गुण है कि इसके द्वारा मनुष्य जो चाहे प्राप्त कर सकता है। यह मानव-जीवन के विकास का मंत्र है। यह प्रवृत्ति मानव को पराधीनता से मुक्त कर अपने ऊपर आश्रित रहना सिखाती है।

iii) विपत्ति मित्रों की कसौटी है। विपत्ति के क्षणों में ही सच्चे मित्रों की पहचान होती है। ऐसे क्षणों में नकली और स्वार्थी मित्र साथ छोड़ जाते हैं, पर सच्चे मित्र के लिए सब कुछ न्यौछावर करने से भी नहीं चूकते।

3) मैं तुम्हारी खोज में मंदिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों, गिरजाघरों, नदियों, तीर्थों, धामों, मजारों, वनों, पर्वतों में भटका, मठों की खाक छानी, तुम्हें सब जगह ढूँढ़ा, पर निराशा ही हाथ लगी। जब तुम्हें सब जगह ढूँढ़ते-ढूँढ़ते मैं हार गया तो यह बात समझ में आयी कि तुम दीन-दुखियों की सेवा में हो।

4) 'थोथा चना बाजे घना'। शीर्षक लोकोक्ति में जीवनानुभव के एक विशिष्ट सत्य की अभिव्यक्ति हुई है। जिनमें बड़बोलापन होता है, जो बढ़-चढ़कर कर बातें करते हैं, जीवन में वे प्रायः कुछ करते नहीं। ऐसे अर्थ-गंभीर व्यक्ति प्रायः अकर्मण्य होते हैं। इसके विपरीत, जो व्यक्ति कम बोलते हैं और गंभीर बने रहते हैं, कर्मठ होते है। खोखला चने के माध्यम से इस लोकोक्ति में इस तथ्य को रेखांकित किया गया है कि जैसे थोथा चना बहुत बजता है, वैसे खोखला आदमी भी बहुत बोलता है। 'थोथा चना बाजे घना' के भाव की अभिव्यक्ति अन्य कई लोकोक्तियों में भी की गई है। जैसे— 'जो गरजते हैं वे बरसते नहीं' या 'अधजल गगरी छलकत जाए'। 'थोथा चना बाजे घना' कहावत से समाज में बड़बोले व्यक्तियों की असलियत उजागर होने के साथ ही हमें इस दोष से अपने को बचाने में भी सहायता मिलती है।

अभ्यास– 3

1) 1) भूमिका

2) 'समाज और साहित्य का पारस्परिक संबंध

i) साहित्यकार पर अपने युग और समाज का प्रभाव

ii) साहित्य समाज का दर्पण— युग-यथार्थ की अभिव्यक्ति

iii) सामाजिक परिवर्तन में साहित्य की भूमिका— कुछ उदाहरणों के साथ

iv) सामाजिक परिवर्तन में साहित्य की भूमिका— तीव्र या मंद

v) चरित्र-निर्माण और राष्ट्रीय एकता के संवर्द्धन की दृष्टि से साहित्य का महत्व

vi) सामाजिक दृष्टि से साहित्यकार का दायित्व

3) उपसंहार

2) किसी राष्ट्र के लिए राष्ट्रभाषा का होना आवश्यक है। हम ऐसे राष्ट्र की कल्पना नहीं कर सकते जिसकी अपनी राष्ट्रभाषा न हो। राष्ट्रभाषा राष्ट्रीय चेतना की प्रतीक होती है, किसी राष्ट्र की संस्कृति और सभ्यता की अभिव्यक्ति का माध्यम होती है। यह राष्ट्रीय एकता के विकास में सहायक होती है— इसके द्वारा राष्ट्रीयता, भावात्मक एकता और पारस्परिक स्नेह-सद्भाव का सहज विकास संभव होता है। जो देश राष्ट्रभाषा में अपने कार्य करते हैं, उनकी निर्बाध उन्नति में कोई संदेह नहीं रह जाता। एक वाक्य में यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रभाषा राष्ट्रीय उन्नति का मूलाधार है।

3) विद्यार्थियों में आज जो अनुशासनहीनता दिखाई देती है, उसके लिए आधुनिकयुगीन

छात्रसंघों के चुनावों पर जो भारी रकम खर्च होती है, उसे ये विभिन्न दल वहन करते हैं और छात्र नेताओं को अपनी स्वार्थ-सिद्धि का साधन बना लेते हैं। ये छात्र-नेता राजनेताओं को अपना आदर्श मान बैठते हैं और उन्हीं के समान छल-छद्मपूर्ण आचरण करने लगते हैं। राजनेताओं के संकेत पर विश्वविद्यालयों या महाविद्यालयों में नारेबाजी, हड़ताल, तोड़फोड़ आदि हो जाना आम बातें हैं। इन छात्र नेताओं का प्रभाव अन्य छात्रों पर भी पड़ता है और इनकी देखा-देखी वे भी अनुशासनहीनता और उच्छृंखलता को ही कार्य-सिद्धि का एकमात्र साधन मान बैठते हैं। कहना न होगा कि राजनेताओं द्वारा अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए छात्र-वर्ग के दुरुपयोग के फलस्वरूप शिक्षा के मंदिर आज अनुशासनहीनता के केंद्र बन गए हैं। ('विद्यार्थी और अनुशासनहीनता' के संदर्भ में 'विद्यार्थी और राजनीति' को केंद्रीय मुद्दा बनाने पर आप जैसे जागरूक विद्यार्थियों में से कुछ असहमत भी हो सकते हैं। क्योंकि आज का विद्यार्थी ही कल का नेता बन सकता है। महाविद्यालय और विश्वविद्यालय केवल व्यावसायिक शिक्षा के केंद्र नहीं, वरन् राजनीतिक शिक्षा के केंद्र भी बन सकें तो इसे अस्वाभाविक नहीं माना जा सकता। राजनीति सदैव निरर्थक, नकारात्मक और भ्रष्ट ही नहीं होती। वह सार्थक, सकारात्मक और स्वस्थ भी हो सकती है। अतः विद्यार्थियों के संदर्भ में आप राजनीति के इस पहलू को भी ध्यान में रखें। इससे प्रतिकूल संदेश के प्रति सावधान रहने में आपको सहायता मिल सकती है।)

4) दहेज प्रथा के मूलोच्छेद के लिए इसके विरुद्ध जन-मत तैयार करना होगा — लोगों में यह चेतना जगानी होगी कि यह प्रथा भारतीय समाज के लिए अभिशाप है। इस प्रथा से मुक्ति के लिए केवल वयोवृद्धों को समझाना ही काफी नहीं है। इसके लिए युवक-युवतियों के मनोभावों में परिवर्तन भी आवश्यक है। जब तक युवक-युवतियों के मन में यह भाव पैदा नहीं होता कि वे बिना दहेज के विवाह करेंगे, तब तक इस कोढ़ से मुक्ति संभव नहीं। वस्तुतः दहेज-प्रथा का वर्तमान रूप भारतीय संस्कृति-सभ्यता और देश के गौरव पर एक कलंक है और किसी भी कीमत पर इससे मुक्ति आवश्यक है। देश के प्रत्येक नागरिक से आज यही अपेक्षा है कि इस कुप्रथा से मुक्ति में वह अपना महत्वपूर्ण योग दें।

5) आप इन विषयों में से किसी एक का चयन कर लीजिए। पहले उसकी रूपरेखा बनाइए और फिर प्रत्येक बिंदु का पल्लवन कीजिए।